मिथिला की संस्कृति के परिवेश पर कविता पाठ का आयोजन

- मैथिली कवि सम्मेलन में गूंजी तालियों की गड़गड़ाहट
- अनुमंडल में पहली बार हुआ ऐसा कवि सम्मेलन

बिरौल, निज संवाददाता। अनुमंडल मुख्यालय अवस्थित जेके कॉलेज के सभागार में मंगलवार को साहित्य अकादमी एवं जेके कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में मैथिली कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

इसका विधिवत उद्‌घाटन साहित्य अकादमी के प्रतिनिधि व परामर्श समिति के सदस्य नीता झा, कॉलेज के प्राचार्य डॉ. एस एन पांडेय, रजिस्ट्रार भास्कर ज्योति, प्रो राजकुमार प्रसाद, गेसडा कॉलेज के प्रोफेसर प्रवीण कुमार प्रवंजन ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। इस दौरान मुख्य अतिथि नीता झा ने कहा कि कोसी कमला के दंश झेल रहे सुदूर ग्रामीण क्षेत्र में कॉलेज की स्थापना के 57 वर्ष बाद पहली बार साहित्य अकादमी दिल्ली के तत्वावधान में मैथिली कवि का सम्मेलन हुआ है। उन्होंने मिथिला की सांस्कृतिक विरासत व लोकप्रिय भाषा

सम्मेलन में मंगलवार को शामिल कवि व कवयित्री।

मैथिली को जन-जन तक पहुंचाने पर विशेष जोर दिया। प्रथम चरण के अध्यक्षीय व अतिथियों के सम्मान कार्यक्रम के बाद डॉ राजकुमार प्रसाद के रचित पुस्तक केदारनाथ चौधरी कृतिक दिग्दर्शन पुस्तक के विमोचन मुख्य अतिथि नीता झा सहित मंचासीन सभी अतिथियों ने किया। वही कामिनी की रचित कविता संग्रह 'अंतिम पंचसहिया' को हस्तगत किया गया। आयोजन के दूसरे चरण में मैथिली कविता पाठ शशिबोध मिश्र शशि की अध्यक्षता में अब्दुल कादिर शाकी के 'माथा के चंदन, गेहूं धान की कटनी-आमक चटनी, 'मिथिला धाम नै बिसरू यौ' कविता पाठ पर लोग मंत्र मुग्ध हो गए। भास्कर ज्योति के मैथिली मातृभूमि पर चरणबद्ध विशेष रचना पर हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।